नगरीय जीवन का चितेरा 'उग्र'

डॉ. अरुण घोगरे
सहयोगी प्राध्यापक एवं हिन्दी विभागाध्यक्ष,
बी.एस. पाटील महा., परतवाड़ा

पांडेय बेचन शर्मा 'उग्र' के उपन्यासों में समाज, व्यक्ति और नियति के प्रति आदि से अंत तक व्यंग्य छिपा रहता है। उनके उपन्यासों की यही यंत्रणा उनके क्रांतिकारी हृदय का परिचायक है। 'उग्र' व्यक्ति और समाज की दुर्बलताओं का निदान व्यंग्य द्वारा ही करते हैं। वे व्यक्ति की स्वच्छंद प्रवृत्ति को आदर्श के बंधन में नहीं बाँधना चाहते। उनके साहित्य में स्त्री–श्रृंगार और यौन सम्बन्धी विषयों का उल्लेख अश्लीलता का प्रदर्शन नहीं है, बल्कि उसके चित्रण द्वारा युवक–युवतियों को सही मार्गदर्शन प्रदान करना है। वासनोत्तेजक साहित्य की सृष्टि कर उन्होंने समाज एवं व्यक्ति के जीवन की नग्न वास्तविकता और अश्लीलता का पर्दाफाश किया। उन्होंने वेश्यालय, मदिरालय और गुण्डागिरी का उल्लेख कर युवकों को रिझाने के अलावा उक्त समस्याओं का निदान भी प्रस्तुत किया। उनके प्रमुख उपन्यास, 'दिल्ली का दलाल', 'चंद हसीनों के खुतूत', 'बुधुआ की बेटी', 'शराबी', 'सरकार तुम्हारी आँखों में,' 'जीजी जी,' 'दीबाचा', 'फागुन के दिन चार', 'कढ़ी में कोयला', और 'जुहू' हैं। दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता और बनारस आदि नगरों का महत्व उनके जीवन और साहित्य पर समान रूप से पड़ा। इन नगरों के जीवन की विद्रूपताओं का चित्रण उन्होंने 'फागुन के दिन चार', 'दिल्ली का दलाल', 'कढ़ी में कोयला' और 'जुहू' नामक उपन्यासों में प्रस्तुत किया है।

'सरकार तुम्हारी आँखों में नामक उपन्यास में लेखक ने प्रशासनिक अनीति और अत्याचार का उल्लेख किया है परन्तु सामाजिक विद्रूपताओं को विशाल पैमाने पर चित्रित करने के लिए 'फागुन के दिन चार', नामक उपन्यास में उग्र को विशेष सफलता मिली। उग्र ने इस उपन्यास में समाज में व्याप्त बुराइयों और अनैतिकता का उल्लेख किया है। इस उपन्यास में लेखक ने बम्बई और बनारस के चित्र प्रस्तुत किये हैं। बम्बई के चित्र में उन्होंने फिल्मी दुनिया के रूपहले पर्दे के पीछे छिपी घिनौनी मानसिकता और नग्न अश्लीलता भरे जीवन का चित्रण किया है।

'फागुन' के दिन चार में उग्र ने बनारस के विलासी एवं अनैतिकतापूर्ण जीवन का चित्र प्रस्तुत किया है। बनारस के परम्परावादी परिवारों में शुरू हो रही विघटन की प्रक्रिया का उल्लेख बनारस के प्रतिष्ठित और ब्राम्हण परिवार–रत्नशंकर और उसकी दो पीढ़ियों के अंतरंग वर्णन से प्राप्त होता है। बनारस के जनजीवन की सबसे घृणित कुप्रवृत्ति तत्कालीन समाज में व्याप्त समलैंगिक मैथुन की समस्या थी।
लीलाधर के पुत्र राजू के प्रति रत्नशंकर के नाती की ही नहीं बल्कि बनारस के अन्य व्यक्ति भी उसे इसी कुदृष्टि से देखते हैं। इसी प्रतिद्वन्द्विता में राजू की हत्या हो जाती है। दूसरी ओर बम्बई की फिल्मी दुनिया में व्याप्त विद्रूपताओं का चित्र अंकित किया

गया है। उग्र फिल्म संसार के वैभव, चकाचौंध के पीछे छिपे हुए निम्न कोटि के जीवन का तथा वर्षों से कला एवं पर्दे की आड़ में चल रहे अनैतिक एवं अवैध कृत्यों का उल्लेख किया। इस उपन्यास में फिल्मी दुनिया में व्याप्त भागवाद और अर्थलिप्सा का विशद वर्णन किया गया है। नायक–नायिका का जीवन छल–छद्म, अविश्वास और असंतोष से ग्रस्त है।

'दिल्ली का दलाल' नामक उपन्यास में उग्र ने चित्रित किया कि भले घर की स्त्रियों और बालिकाओं को किस तरह बहला–फुसलाकर उठा लिया जाता है और फिर उनकी इज्जत अस्मिता से किस प्रकार खेला जाता है कि इस दुर्दशा का इतना विशद और रोमांचकारी चित्रण शायद ही हिन्दी साहित्य में कहीं मिले।

'कढ़ी में कोयला' नामक उपन्यास में उग्र ने कलकत्ता जैसे महानगर में उच्चस्तरीय जीवन का कलुषित चित्र उभारा है। इस उपन्यास में कलकत्ता के विकास, वहाँ के निवासियों के जीवन, व्यापार, सामाजिक विविधता तथा धनपतियों की दुष्टता का अंतरंग चित्र प्रस्तुत किया गया है। जिन बुराईयों को उग्र ने कलकत्ता और बम्बई में देखा उनका छोटा रूप हमारे सभी नगरों में विद्यमान है। इसी संदर्भ में उग्र ने बनारस के पक्के मुहाल नामक मुहल्ले का चित्र भी प्रस्तुत किया है, जिसमें उग्र जी की समाजसुधारक प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं।

उग्र ने अपने अंतिम उपन्यास 'जुहू' में बम्बई महानगर के धनिकों के विलासी और कुत्सित जीवन का चित्रण किया है। धन–लालसा में पुलिस प्रशासन, गुण्डे, वेश्यायें और असामाजिक तत्व धनिकों की सहायता करते हैं और उनकी कुत्सित लालसाओं को बढ़ावा देते हैं, जिससे जन सामान्य में असंतोष फैलता है, कानून एवं न्याय व्यवस्था ठप्प हो जाती है। डॉ. मधुधर लिखते हैं कि– ''उपन्यासकार के रुप में उग्र की एक उल्लेखनीय विशेषता है, उनके उपन्यासों में सामाजिक विषमताओं का वस्तुपरक चित्रण। बनारस कलकत्ता और बम्बई का महत्व उनकी जीवन और साहित्य में समान रुप से है। इन नगरों की विद्रूपताओं का चित्रण उन्होंने 'फागुन के दिन चार', 'कढ़ी में कोयला' और 'जुहू' नामक उपन्यासों में प्रस्तुत किया।''[1]

उग्र के अधिकतर उपन्यासों में भारत के महानगरीय जीवन का उल्लेख किया गया है, जहाँ धन्ना–सेठों के काले कारनामें, गुण्डागिरी, लूट–खसोट, बेईमानी, वेश्यावृत्ति और अनेक सामाजिक समस्याओं का नग्न चित्र प्रस्तुत किया गया है। अतः उग्र को नगरीय जीवन या महानगरीय जीवन का चितेरा कह देना अतिश्योक्तिपूर्ण नहीं लगता।

संदर्भ

1. डॉ. मधुधर : उग्र का कथा साहित्य : पृ. 173